

प्रीलमिस फैक्ट्स : 15 जून 2018

आयुषमान भारत- राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मशिन

14 जून, 2018 को 20 राज्यों तथा केंद्रशासित राज्यों ने आयुषमान भारत- राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा मशिन (AB-NHPM) को लागू करने के लिये सहमति पत्रों पर हस्ताक्षर किये जो केंद्र और राज्यों के बीच सहयोग का एक महत्वपूर्ण कदम है।

महत्वपूर्ण बटु

- केंद्र नीति निर्माण करेगा और राज्यों को इस योजना को अपनाना होगा। AB-NHPM देश के 50 करोड़ लोगों (10 करोड़ परिवार) को सुरक्षा प्रदान करेगा।
- लाभार्थी बनिा नकद और बनिा किसी कागज़ात के भारत में कहीं भी इस सुविधा का लाभ उठा सकते हैं।
- इसके अंतर्गत सरकारी और नज़ी अस्पतालों में स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध रहेगी।
- AB-NHPM लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करेगा, जबकि स्वास्थ्य व वेलनेस केंद्र प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करेंगे।
- आयुषमान भारत योजना से स्वास्थ्य पर होने वाले अत्यधिक खर्च को कम किया जा सकेगा।

आयुषमान भारत योजना

- आयुषमान भारत योजना भारत सरकार द्वारा प्रस्तावित योजना है, जिसे 1 अप्रैल, 2018 को पूरे भारत में लागू किया गया था।
- इस योजना का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों (बीपीएल धारक) को स्वास्थ्य बीमा मुहैया कराना है।

भारतीय मूल की दविया बनी अमेरिकी कंपनी GM की मुख्य वित्तीय अधिकारी

हाल ही में भारतीय मूल की अमेरिकी महिला दविया सूर्यदेवरा को अमेरिका की सबसे बड़ी कंपनी जनरल मोटर्स (GM) का मुख्य वित्तीय अधिकारी नियुक्त किया गया है।

महत्वपूर्ण बटु

- दविया सूर्यदेवरा किसी भी ऑटो कंपनी में मुख्य वित्तीय अधिकारी का पद ग्रहण करने वाली पहली महिला हैं।
- जनरल मोटर्स विश्व की पहली कंपनी है जिसके CEO तथा CFO दोनों पदों पर महिलाएँ नियुक्त हैं।
- दविया सूर्यदेवरा 1 सितंबर से अपना कार्यभार संभालेंगी और जनरल मोटर्स के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO) मैरी बर्रा को रिपोर्ट करेंगी।

दविया सूर्यदेवरा

- भारत में जन्मी दविया ने चेन्नई के मद्रास विश्वविद्यालय से वाणिज्य में स्नातक किया है।
- 22 साल की उम्र में वह उच्च शिक्षा के लिये संयुक्त राज्य अमेरिका के हार्वर्ड चली गईं। यहाँ से MBA की डिग्री ली और नविश बैंक UBS में अपनी पहली नौकरी शुरू की तथा 25 साल की उम्र में जनरल मोटर्स से जुड़ी थीं।
- 2016 में दविया को ऑटोमोटिव क्षेत्र की 'राइजिंग स्टार' का खिताब मिला था।

तेज़ी से पघिल रही है अंटार्कटिका की बर्फ़

एक नए अध्ययन रिपोर्ट में विशेषज्ञों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम द्वारा कहा गया है कि अंटार्कटिका की बर्फ़ बहुत तेज़ी से पघिल रही है।

महत्वपूर्ण बटु

- वर्ष 1992 से अब तक लगभग 3 ट्रिलियन टन बर्फ़ पघिल चुकी है।
- पछिले 25 सालों में दक्षिणी महाद्वीप की बर्फ़ इतनी तेज़ी से पघिली है कि इससे टेक्सास लगभग 13 फीट (4 मीटर) की गहराई तक ढक सकता है
- वैज्ञानिकों की गणना के अनुसार, बर्फ़ पघिलने के कारण विश्व के सभी महासागरों के जल स्तर में 7.6 मिलीमीटर की वृद्धि हुई है।

- 1992 से 2011 तक, अंटार्कटिका में वार्षिक रूप से 84 अरब टन बर्फ (76 बिलियन मीटरिक टन) पघिल गई।
- नेचर पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन रिपोर्ट के मुताबिक 2012 से 2017 तक बर्फ पघिलने की दर सालाना 241 बिलियन टन (219 अरब मीटरिक टन) से अधिक हो गई।
- रिपोर्ट के अनुसार पश्चिम अंटार्कटिका का वह हिस्सा, जहाँ सबसे अधिक बर्फ पघिली है, पतन की स्थिति में पहुँच चुका है।
- यह अध्ययन नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के साथ काम कर रहे वैज्ञानिकों की टीम द्वारा किया गया दूसरा मूल्यांकन है।
- यह संभव है कि केवल अंटार्कटिका की बर्फ पघिलने के कारण सदी के अंत तक समुद्र का जल स्तर लगभग आधा फुट (16 सेंटीमीटर) तक बढ़ सकता है।

वर्शिव रक्तदान दविस

14 जून को पूरी दुनिया में वर्शिव रक्तदान दविस मनाया गया। इस दविस का मुख्य उद्देश्य सुरक्षति रक्त एवं रक्त उत्पादों की आवश्यकता के बारे में जागरूकता बढ़ाना और रक्तदाताओं को सुरक्षति जीवन रक्षक रक्तदान करने के लिये प्रोत्साहति करते हुए उनका आभार व्यक्त करना है।

महत्त्वपूर्ण बढि

- वर्ष 1997 में वर्शिव स्वास्थ्य संगठन ने 100 फीसदी स्वैच्छिक रक्तदान नीतकी नीव डाली थी।
- वर्ष 1997 में संगठन ने यह लक्ष्य रखा था कि वर्शिव के प्रमुख 124 देश अपने यहाँ स्वैच्छिक रक्तदान को ही बढ़ावा दें।
- उद्देश्य यह था कि रक्त की ज़रूरत पड़ने पर उसके लिये पैसे देने की ज़रूरत नहीं पड़नी चाहिये, परंतु इस नीतपर अब तक लगभग 49 देशों ने ही अमल किया है।
- वर्शिव रक्तदान दविस 2018 की थीम “Be there for someone else. Give blood. Share life” है।

14 जून ही क्यों?

- महान वैज्ञानिक कार्ल लैंडस्टाईन का जन्म 14 जून, 1868 को हुआ था। उन्होंने मानव रक्त में उपस्थित एग्ल्युटिनिन की मौजूदगी के आधार पर रक्तकणों का A, B और O समूह में वर्गीकरण किया।
- इस वर्गीकरण ने चिकित्सा विज्ञान में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी इसी खोज से आज करोड़ों से ज्यादा लोग रोज़ाना रक्तदान करते हैं और लाखों लोगों की ज़िंदगियाँ बचाई जाती हैं।
- इस महत्त्वपूर्ण खोज के लिये ही कार्ल लैंडस्टाईन को वर्ष 1930 में नोबल पुरस्कार दिया गया था।

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/prelims-fact-15-06-2018>

